Adda247

GET IT ON Google Play

LAWRENCE KOHLBERG (MORAL DEVELOPMENT)

Proposed 3 levels and 6 stages of moral reasoning.

WHAT IS MORAL DEVELOPMENT?

Moral reasoning develops from self-interest to social responsibility and universal principles.

LEVEL 1
PRE-CONVENTIONAL LEVEL
(Focus on Self)

Moral reasoning based on personal consequences and individual needs.

1 STAGE 1: Obedience and Punishment Orientation

Right behavior is doing what is told to avoid punishment.

2 STAGE 2: Individualism and Exchange

Right behavior is based on what is in it for me; a fair exchange.

LEVEL 2
CONVENTIONAL LEVEL
(Focus on Society)

Moral reasoning based on social norms, rules and maintaining order.

3 STAGE 3: Good Interpersonal Relationships

Right behavior is to be a good boy/girl; to gain approval of others.

4 STAGE 4: Maintaining Social Order

Right behavior is to obey law and rules; to maintain social order.

LEVEL 3
POST-CONVENTIONAL LEVEL
(Focus on Principles)

Moral reasoning based on universal ethical principles and conscience.

5 STAGE 5: Social Contract and Individual Rights

Right behavior is based on shared values and the rights of individuals.

6 STAGE 6: Universal Ethical Principles

Right behavior is based on self-chosen ethical principles of justice, equality and human dignity.

KEY IDEA

Kohlberg believed that moral reasoning progresses through three levels and six stages, from self-interest to universal ethical principles.

JOURNEY OF MORAL GROWTH

- I do it to avoid punishment.
- I do it for my own benefit.
- I do it to be liked and accepted.
- I do it to follow rules and laws.
- I do it because it is right and just.

REMEMBER: Moral reasoning evolves from self-interest → society's expectations → universal principles.

Adda247

GET IT ON Google Play

लॉरेंस कोलबर्ग (नैतिक विकास)

नैतिक तर्क के **3 स्तर (Levels)** और **6 अवस्थाएँ (Stages)** प्रस्तावित कीं।

नैतिक विकास क्या है?

नैतिक तर्क का विकास
स्वार्थ (Self-interest) से
↓
सामाजिक उत्तरदायित्व (Social responsibility)
↓
सार्वभौमिक सिद्धांतों (Universal principles) तक होता है।

स्तर 1: पूर्व-परंपरागत स्तर

(Pre-Conventional Level)
(स्व-केंद्रित / Focus on Self)

नैतिक तर्क व्यक्तिगत **परिणामों** और **व्यक्तिगत आवश्यकताओं** पर आधारित होता है।

अवस्था 1: आज्ञापालन एवं दंड उन्मुखता

सही व्यवहार वह है जो दंड से बचने के लिए किया जाए।

अवस्था 2: व्यक्तिवाद एवं विनिमय

सही व्यवहार वह है जो मेरे लिए लाभकारी हो; लेन-देन (Fair exchange) पर आधारित।

स्तर 2: परंपरागत स्तर

(Conventional Level)
(समाज-केंद्रित / Focus on Society)

नैतिक तर्क **सामाजिक मानदंडों, नियमों** और **व्यवस्था** बनाए रखने पर आधारित होता है।

अवस्था 3: अच्छे पारस्परिक संबंध

सही व्यवहार वह है जिससे हम "अच्छे लड़के/लड़की" बनें और दूसरों की स्वीकृति मिले।

अवस्था 4: सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना

सही व्यवहार वह है जिसमें कानून और नियमों का पालन हो; समाज में व्यवस्था बनी रहे।

स्तर 3: उत्तर-परंपरागत स्तर

(Post-Conventional Level)
(सिद्धांत-केंद्रित / Focus on Principles)

नैतिक तर्क **सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों** और **अंतरात्मा (Conscience)** पर आधारित होता है।

अवस्था 5: सामाजिक अनुबंध एवं व्यक्तिगत अधिकार

सही व्यवहार साझा मूल्यों और व्यक्तिगत अधिकारों पर आधारित होता है।

अवस्था 6: सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत

सही व्यवहार स्व-चयनित नैतिक सिद्धांतों (न्याय, समानता, मानव गरिमा) पर आधारित होता है।

मुख्य विचार (Key Idea)

कोलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास **3 स्तरों** और **6 अवस्थाओं** के माध्यम से **स्वार्थ → सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों** तक प्रगति करता है।

नैतिक विकास की यात्रा (Journey of Moral Growth)

1. मैं दंड से बचने के लिए करता हूँ।
2. मैं अपने लाभ के लिए करता हूँ।
3. मैं दूसरों को खुश करने के लिए करता हूँ।
4. मैं नियमों और कानूनों का पालन करने के लिए करता हूँ।
5. मैं अधिकारों और मूल्यों के आधार पर करता हूँ।
6. मैं इसलिए करता हूँ क्योंकि यह सही और न्यायसंगत है।

याद रखें (Remember): नैतिक तर्क का विकास होता है: **स्वार्थ → समाज की अपेक्षाएँ → सार्वभौमिक सिद्धांत**